15531

15531

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
अयोध्या
श्री मणिराम दास छावनी सेवा ट्रस्ट

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
15531
श्री सीताराम दास छावनी सेवा ट्रस्ट

श्रीहनुमते नमः

श्रीसीतारामप्रेम पदावलि

के

लेखकः—

नाम रूप लीला ललित अवधपुरी सुखधाम।
पल छिन में विसरै नहीं सुमिरन सीताराम ॥ १ ॥

कामधेनु चिन्तामणि कल्प वृक्ष सुखसार।
सिया नाम सुमिरन करत होत महा भवपार ॥ २ ॥

श्रीसीतारामनामाश्रित प० बाबा श्रीशालिग्राम दासजी
महाराज
बाबा श्रीमणिराम जी की छावनी
श्रीअयोध्याजी

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक एक सन्त के हृदय का प्रेमोद्गार है। इसमें काव्य की विशेषतायें ढूंढ़ना औषधि में स्वाद ढूंढ़ने के समान है। अस्तु ये पद काव्यदृष्टि से नहीं बल्कि भक्ति भाव की दृष्टि से पढ़ने और गाने योग्य हैं। भूमिका में और कुछ न लिखकर केवल रचयिता का संक्षिप्त परिचय दे देना ही पर्याप्त समझता हूँ। आपका जन्म जिला चम्पारन ग्राम श्रोतर (पुरैना) में एक कुशवाहा वंश के पुण्य कीर्ति श्रीशरण जी महतो के घर सं० १९४५ के लगभग हुआ था। ३० वर्ष की आयु तक गृहस्थाश्रम में रहे पश्चात् सन्तों के सत्संग का ऐसा प्रभाव पड़ा कि सांसारिक प्रपंचों से विरक्ति सी होने लगी। संयोग से श्री १०८ श्री स्वामी जानकीदास जी महाराज के दर्शन हुये, उन्हीं से राम मन्त्र की दीक्षा भी प्राप्त की। अन्यान्य तीर्थों के भ्रमण करने के बाद श्रीमणीराम जी की छावनी (अयोध्या) में निश्चित रूप से निवास करने लगे। यहीं के प्रसिद्ध सन्त श्री १०८ श्री स्वामी रामसुन्दर दासजी रामायणी से रामचरित मानस का अध्ययन किया और वैष्णव धर्म की शिक्षा प्राप्त की। प्रभु भजन ही आपकी दिनचर्या है। आपके शुद्ध हृदय में समय समय पर जो भाव उठे वही पद्य रूप में संकलित हैं। हमारे पास संशोधन.

के लिये जब इसकी पांडुलिपि आई तो मैंने कहीं कहीं कुछ शब्द परिवर्तित कर दिये। किन्तु महात्मा जी की भाषा शैली और भाव सुरक्षित रहे इसका ध्यान रखना पड़ा है। अधिक संशोधन करने पर पुस्तक की रूप रेखा बदल जाने की सम्भावना थी। अस्तु साधारण देख रेख करके पुस्तक प्रकाशित कर दी गई। आशा है श्रीरामभक्तों को प्रिय होगी। किमधिकम् विज्ञेषु—

भगवद्दासानुदास
'बालकवि'

❀ श्रीसीतारामाभ्यां नमः । श्रीयुगल आचार्याय नमः ❀

❀ श्रीमिथिला श्रीअवध परिकरेभ्यो नमः ❀

श्रीसीताराम प्रेम पदावली

❀ मङ्गलाचरण ❀

दो० सुमिरि राम सिय संत गुरु, श्रीपति गौरि गणेश ।
मारुत नंदन करहु कृपा, कीजै कृपा महेश ॥ १ ॥
उर प्रेरकसिय राम जी, जो कुछ लिखें बनाय ।
भूल चूक छमिये सुजन, ये ही विनय सुनाय ॥ २ ॥

श्रीराम जन्म बधाई के पद

नौमी लगन शुभ दिनवां हो सुन्दर बाजे बधैया ।
राम लखन अरु भरत शत्रुहन, प्रगट भये त्रिभुवन सुखदैया ॥
चढ़ि विमान सुरगन बधु नाचहिं सुमन वृष्टि झरि लैया ।
भांड़ पवरिया धगरि-नउनिया, लेहिं निछावरि मन भैया ॥
शालिग्राम चहत मुख दर्शन, शिव विरंचि जाको गुन गैया ॥१॥

पद २

राजा जनक की नगरिया हो बाजे डंका बधाई।
राजा जनक जीके कन्या प्रगट भई नाम सियाजू कहाई।
रानी सुनयना गोद खेलावहि निरखि लली सुख पाई॥
भांड़ पवरिया धगरि नउनियां लेत निछावरि जो मन भाई।
सुखी भये तिहुँ लोक चराचर मंजु लता बलि जाई॥ २॥

श्रीकिशोरी जी की वाल क्रीड़ा वर्णन पद ३

किशोरी जी के पायन में बाजे पैंजनियां।
मातु सुनयना खेल खेलावहिं हाथ में दिये रुन झुनियां।
डगमग चलत धरत पग थिर नहिं धमकि चले पग तनियां॥
अद्भुत छटा विलोकि चकित सब, आनंद भई सब रनियां।
शालिग्राम छबि कहँ लगि बरणौं कह लगि करौं गुन गनियां॥

श्रीमिथिला माहात्म्य बर्णन पद ४

राजा जनक की नगरिया हो कैसी सुन्दर बहार।
कहीं खिले बेला कहीं चम्पा चमेली कहीं खिले सुन्दर अनार।
अष्ट सिद्धि नवनिधि जहाँ निश दिन विहरत है लली प्यार॥
सब सिद्धन के सिद्ध भूमिका मिथिला नाम अधार।
शालिग्राम कवि कहँलगि वरणौं जहँ स्वामिनिसिय प्रगटी हमार॥

श्रीअवधपुरी का माहात्म्य बरणन पद ५

अवधपुरी के नगरिया हो कैसन सुन्दर बहार।
कहीं गलियाँ कहिं महल अटारिन कहीं सदर सड़क बाजार।

जन्मभूमि अरु रतन सिंहासन कनक भवन जानहिं सुखसार ॥
उत्तर दिशि सरयू बहैं पावनि पतितन की करनी उद्धार ।
चौकी है बजरंग बली की शालिग्राम को नाम अधार ॥

पद ६

आये महा मुनिरैया हो याचन रघुरैया ।
असुर समूह सतावहिं मोहो, कोई न करत सहैया हो । या० ॥
दीजै कुँवर सुघर मेरे रक्षक राम लखन दोऊ भैया हो । या० ॥
सुनि मुनि बचन दुखित भये राजा का सुनाई का कहैया हो । या०
अन धन लक्ष्मी कोष खजाना जो चाहो सो पैया हो । या० ॥
राम देत नहिं बनै गोसाईं सर्वस मेरे सुख दैया हो । या० ॥
तेहि अवसर बशिष्ठ मुनि आये कहि बहुबिधि समुझैया हो । या ॥
देहु पुत्र सब होइ कल्यानहिं त्रिभुवन में यश छैया हो । या० ॥
सुनि गुरु बचन दिये दोऊ सुत कहैं शालिग्राम गुन गैया हो ॥ या

पद पूर्वी मिथिला वासिनी सखी प्रति पद ७

मिथिला नगरिया में ऐलन हो अवधेशी छैला ।
माथमें मुकुट मणि श्रवणन कुंडल सोहइ भाल में तिलक झलकइ छैन हो अवधेशी छैला । मिथिला० ॥ भहुवां कमान सर तिरछी कतल करे, जुलफन के जाल में फँसैलन हो अवधेशी छैला । मिथिला० ॥ श्याम रंग सुन्दर प्यारे मोहिनी मुरतिया होइ छी हो अवधेशी छैला । मिथिला० ॥ शालिग्राम सिया जोगे दुलहा संजोगवा रचे तिहुँपुर मंगल भैलन हो अवधेशी छैला ।

फुलवारी-कीर्तन पद ८

अवध छैल धनु धरिया हो सुन्दर राज किशोर।
एक गोरे एक श्याम सलौने अवहिं उमरिया के थोर।
गुरू आज्ञा चले पुष्प उतारन चितइ रहें चहुँ ओर॥
तेहि अवसर सीता राधव के लगे युगल दृग कोर। अवधव०।
शालिग्राम ध्यान धरो मन में होकर प्रेम विभोर॥

पद ९

राजा जनक की बगिया हो कैसी सुन्दर वहार।
चम्पा चमेली गुलाब की कलियां खिले केवड़ा व केतकी अनार।
नंदन कुवरे वन चैत रथ कोटि लाजै कल्प वृक्ष कोटि लजावें वलि-
हार॥ गिरजा पूजन सिया पधारीं चितवत राज कुमार।
श्री सिय जूके योग्य देखि वर मंजुलता वलिहार॥

पद १०

राजा जनक जी की ललिया हो मानो चम्पा की कलिया।
उमा रमा ब्रह्माणी सेवत चरण कमल की वलिया हो।
रिद्धि सिद्धि नव निधि कर जोरे चाहत कृपा की मलिया हो॥
सुन्दर रूप अनूप देखिकै वगिया में मोहे संवलिया हो।
मंजुलता की स्वामिनि सिय जू करि देहु मोहिं निहलिया हो॥
मानो०॥

पद ११

गिरजा पूजन को चली है जनक ललिया।
सखि समूह विच सियकी शोभा जनु छविगन मध्य महा छविया।

अक्षत चन्दन सुमन मोल लिए पूजन की भरी डलिया ॥
हे जगदम्बे मातु षडानन पुरवहु मोर मनोरथ भलिया ।
मंजुलता प्रसन्न भई गिरजा मिलिहि सुघर वर सांवलिया ॥

पद १२

संवलिया रे कैसा जादू चलाया ।
यन्त्र न मन्त्र न जादू टोना तिरछी न नजरिया लगाया ।
सुधि बुधि कुछ न रही तन मन में रूप के जाल फंसाया ॥
हिलत न चलत रहत नहीं पग थिर प्रेम नगर में भुलाया ।
शालि ग्राम सखि कहँ लगि वरणौं चितवनि चित को चुराया ॥

पद १३

कैसन सुन्दर संवलिया वांके छैल मन हरिया हो ।
क्रीट मुकुट सिर श्रवनन कुंडल भाल तिलक केशरिया हो ।
जुल्फन जुलुमदार नयनन सर मंद हसनि जादू डरिया हो
गले कंठा मनि पदिक लरन डर करकमलन धनु धरिया हो ।
पीत रंग जामा सोहें कछनी पीताम्बर शालि ग्राम वलि हरिया हो
कैसन सुन्दर संवलिया वांके छैल मन हरिया ॥

पद नं० १४

निरखु सजनी वगिया में अईले दोऊ भैया ।
माथे मुकुट मनि कानन कुण्डल तिलक भाल सुघरया
श्याम गौर मन मोहन मूरति चितवनि चित को चुरैया ॥

चहुँ दिशि चितवत सुमन बाग में अजब छटा छहरैया।
शालिग्राम सखि कहं लगि बरणौं सिया योग्य बरहैं सुघरैया॥

फुलवारी कीतन सखी प्रति बचन पद १५

सखि आये कुवर फुलवरिया हे।
एक गोरे एक श्याम सलोने क्रीट मुकुट सिर मोरिया हे।
घूमत लता कुंज चहुँ दिशि में करत फिरत उजियरिया हे॥
अद्भुत छटा घटा को लाजा वन सबही के मन हरिया हे।
है माली कोई बाग को रक्षक चाहौं पुष्प उतरिया हे।
तेहि अवसर आई राज कुमारी लग गई नेह नजरिया हे।
चले न हिले रहे दोउ एक टक प्रेम प्रवाह की धरिया हे॥
धरि धीरज एक सखी कहति है पुनि आइब यहि बेरिया हे।
मंजुलता दोउ सर्वस मेरे तन मन धन बलि हरिया हे॥

पद १६

कैसन संवलिया सलोना हो मुझपै जादू चलाया।
मन्त्र न यन्त्र न तन्त्र दिखावे रूप छटा छहराया।
तिरछी नजरिया घायल करि डारे सूझे न आपन पराया॥
सुधि बुधि रहत न एको सजनी चितवनि से चित को चुराया।
हम सबको मोहे वह भी मोहा गये मंजुलता चले एकौ न माया॥

धनुष यज्ञ कीर्तन पद १७

राजा जनक जी के यज्ञ में हो भीड़ भई घन घोर।
देश २ के भूपति आये, तिलभर धनुहा सकै न उठाये।

सब हारि गये कर जोर ॥ रावण बाण महा भट मानी, सके न तोर चले अज्ञानी । शिव धनु कठिन कठोर ॥ सुन्दर श्याम कमल दल लोचन, मिथिला पति को शोक विमोचन। भवधनु खंडेऊ नवल किशोर। नृप गन के अभिमान टरे हैं, परशुराम के गर्ब हरे हैं, । कहैं शालिग्राम कर जोर॥

पद १८

तोड़ो धनुष रघुनन्दन हो दुख भंजन कृपाल।
सुर पुर नर पुर तिहुँपुर मगन सब कोई भये निहाल ॥
सुमन वृष्टि करि सुर वधु नाचैं नारद वीणा लिए कर ताल।
नभ चिरंचिसन कादिक देखैं रघुकुल मनि जय दशरथ लाल ॥
शालिग्राम के सियवर स्वामी हरो मोर भव जाल।

श्री सीताराम झाँकी पद पूर्वी पद १९

सखि सुन्दर सिया के सजनवां हे।
माथे मौर मनि कानन कुण्डल भाल में केशर चंदनवां हे।
अद्भुत छटा सबहिं को मोहै मंद मधुर मुसकनवां हे ॥
गौर श्याम मन हरन सबहिं को रति पति कोटि जलनवां।
जीवन लाभ सुफल सब कीजै मंजुलता दरशनवां हे ॥

पद २०

सखि कैसन सुघरवर झांकी रे।
माथे मौर मनि श्रवनन कुंडल भाल तिलक सोहै जाकी रे।
सुन्दर श्याम हरन मन मोहन अजब छटा है बांकी रे ॥

पहिरे वसन्ती सुन्दर जामा जाहि देखि मति थाकी रे।
रामसिया की सुन्दर झांकी प्यारी है मंजुलता को रे॥

पद २१

सिया हो पिया सुन्दर झांकी दरशनवाँ।
चन्द्रिका मुकुट सोहे कर्ण फूल कुंडल मोहे वेसरि नासामनिकी हलनवाँ॥ गौर श्याम जोड़ी वांकी अजब छटा है जाको मंद मधुर मुसकनवां॥ हो० ॥ कंचुकी वो जामा सारी धोती औ सोहे किनारी रति पति कोटि लजनवां॥ शालिग्राम सीताराम भूले नहिं आठो याम विसरे न पलछिन ध्यनवां॥ दो० ॥

पाती शंदेह कीर्तन पद २२

राजा जनक भेजें पतिया हो बांचे अवध नरेश।
बहुत दिनन पर सुधि प्रभु पाये लिखी हुई पाती संदेश।
सुनि पाती सब रानी मंगन भई सुधि बुधि नहिं कछु भूषनवेश॥
विश्व विजय श्री जानकि पाये तोरेउ धनुष महेश॥
शालि ग्राम सुख धाम अवध पुर धन्य नगर मिथिलेश॥

बरात कीर्तन पद २३

अवध से आये बरातिहा हो कैसन सुन्दर वहार।
हय दल गज दल रथ दल पैदल चले अगनित अपार।
सरस राग बाजे सहनाई दिये चोप चोप नगारा डार॥
चढ़ि विमान सुरगन सब निरखत करि सुमन बृष्टि व्यवहार।
दोउ गोरे दोउ श्याम सलोने राज कुंवर वर चार॥

माथे मौरमनि कानन कुण्डल भाल तिलक उजियार।
गले कंठा मनि पीतरङ्ग जामा कटि कछनी पीताम्बर जरीदार॥
नख सिख साज शृङ्गार देखिकै लजित कोटि रतिमार।
शालिग्राम छवि कँह लखि बरणौं तन मन-धन बलिहार॥

झूमरा कीर्तन सखी प्रति वचन पद २४

ये सजनियां हो दुल्हा बाड़े कैसन सुकुमार।
दोउ गोरे दोउ सांवर अजब बहार॥
माथे में मौर मनि कान में कुण्डल सोहे भाल तिलक उजियार।
गरे कंठा हारमनि पीतरङ्ग जामा पहने कछनी पीतांवर लहरदार
शालिग्राम गावें सखी बिधना रचलैं जोड़ी सिय जोग लिखेकरतार

पद २५

राजकुँवर बर चारि हो सखि सुन्दर साँवरिया।
दोऊ गोरे दोउ श्याम सलोने विधि रची जोड़ी भलिया॥
श्रुति कीरति उरमिला मांडवी चारिउकुँ वरि सुन्दर ललिया।
सीताराम बिवाह मगन सब सुमन बृष्टि झरि फलिया॥
मंजु लता सब सुफल मनोरथ मंगल गावैं सब आलिया।

राग झूमरा मिथिला वासिनी सखी प्रति पद २६

हे सहेलिया हे देखि लेहु सिया के सजनवां॥
माथमें मौरमनि कानमें कुण्डलवा प्यारे भालमें केशर चंदनवां।
जुलुफ जुलुमियां बांके तिरछे नयनवां सर मंद २ मधुर मुसकनवां

घोड़ा पै चढ़ल अइलें चारि दुलहवा दोउ गोरे दोउ श्यामबदनवां।
मंजुलता सियापिया से लगनवां लागे निशदिन गाऊँ मंगल गनवां

श्रीसीताराम भांवरी बिबाह कीर्तन पद २७

सिया पिया सुन्दर देत भंवरिया है ॥
श्रुति कीरति उरमिला मांडवी चारो कुँवर कुँवरिया है।
दोउ गोरे दोउ सुघर सांवरे चारो युगल शुभ जोड़िया है ॥
आगे पाछे चारो चले सबहीके मनहरे मानो चंद्र सूर्य उजियरियाहै
उमा रमा ब्रह्माणी निरखहिं जन्म सुफल सब करिया है ॥
बैठे सिंहासन चारो दुलहा-दुलहिन करैं सेंदुर दानलिलरियाहै
सुरपुर नरपुर तिहुँपुर मंगल सुमन वृष्टि करि झरिया है ॥
धनि मिथिला धनि अवधपुरी जहँ दोउ दिशि आनंद भरिया है।
सीताराम बिवाह उछाह है मंजुलता बलिहरिया है ॥

श्री राम जी का जेवनार कीर्तन पद २८

भोजन कीजै ललन चारो भइया है ॥
अवध छाँड़िके मिथिला आये इहां भये जनक जमैया है।
छप्पन भोग छतीशो व्यंजन नाना भांति मिठइया है ॥
षट रस सरस मुरब्बा चटनी विविध साग सुख दइया है।
मंजु लता सखि गारी दैदै हँसत हृदय हर्षैया है ॥

पद १२

दुलहा भोजन कीजै राज कुँवर बर चारि।
खाभा खुरमा पूड़ी जलेबी मालपुआ रस दार ॥

सोहन भोग अरु लड्डू कचौड़ी पेड़ा रसगुल्ला सों प्यार।
गोझिया इमिरती रबड़ी मलाई बर्फी दधि चिउरा की बहार।
दाल भात अरु कढ़ी पकौड़ी चटनी चोखा अँचार।
तिलौरी दनौरी मेथौरी अदौरी साग है त्रिबिध प्रकार॥
रुचि प्रिय भोजन करहिं परस्पर आनंद बढ़ेला अपार।
करि अँचवन कमला जल निर्मल दिया पान इत्र हितकार॥
हास बिनोद करत सब सखियां मंजु लता बलिहार॥

गारी पूर्वी पद सिद्धि प्रति बचन पद २०

श्री रघुनंदन हो रघुकुल मणि उजियार॥
सुनि के आश्चर्य आवे कहत न बने कुछु यहएक बिचार।
काहे मातु पिता तव गोरे तुम काहे कारे सुकुमार॥
बहिन तुम्हारी श्रिनरी शान्तादेवी काहे गइलीं तपसीसङ्ग जंगल सिधार। व्यंग बचन सुनि हँसे चारो भइया देखो कैसी नारि व्यवहार॥ लक्ष्मी निधि सिधि नारिवर्ग दोऊ कैसे संग करत बिहार। भावी संयोग बश तहां पहुँचावे जाके जेहि बिधि लिखे करतार॥ करजोड़ि खड़ी सिधि शरण तुम्हारे प्रभु छिणएकआशा तुम्हार। कर्म बश जहाँ भेजो भूलो नहिं सिया पिया मंजुलता बलिहार॥

बिदाई कीर्तन पद २१

चले अवध नगर के कुंवर रसिया॥
प्रेम प्रवाह सब भरे करुणा मय सुधि बुधि नहीं है कवन कसिया॥
माधुरि रूप चखायदगन सब जिमि मृग राज परे फंसिया॥

शिव विरंचि जेहि ध्यान न आवैं सो सुखलूटै मिथिला वसिया ॥
करि सन्मान सबहिं मिथिले शहिं यथा जोग जो जौन जसिया ॥
शिवि का शुभग चढ़ाय कुंवरि सब दिये दान बहु दास दसिया ॥
जंह २ वास किये रघुनंदन सकल अमंगल करैं नसिया ॥
ऋद्धि सिद्धि नव निधि जिन सम्पति कर जोरे रहैं सब खुसिया ॥
शालिग्राम यश कह लगि बरणौं सबहिं करत हैं मोर हँसिया ॥

मिथिला बासिनी सखी प्रति बचन पद ३२

चितको चुरौले जाले प्रनवाँ हो अवधेशी छैला ॥
साँवली सुरतिया वांके हिया में बसेला आके ।
निशदिन बसेला मोरे ध्यनवां हो अवधेशी छैला ॥
किने दूर गइले सजनी कँहवा बितैहैं रजनी ।
बिन देखे परै न चयनवां हो अवधेशी छैला ॥
एक मन करे सखिया सिया सङ्ग जइतो सथिया ।
लोगवा करहिं बदनमवां हो अवधेशी छैला ॥
शालिग्राम सीताराम भूलो नहिं आठो याम ।
धीरज से देहैं दरशनवाँ हो अवधेशी छैला ॥

बिदाई कीर्तन पद ३३

लालन चाहत अवध को बिदाई है ॥
हौं बिरहिन सब कैसे रहेंगी आनंद रूप दिखाई है ।
सुन्दर श्याम कमल दल लोचन सबही के चित को चुराई है ॥
कछु दिन रहिये प्राण जीवन धन सबको करहिं भलाई है ।

कहां ऐसन दुलहा कहां ऐसन दुलहिन प्रगट प्रभाव जनाई है ॥
निर्गुन ब्रह्म सगुन रूप धरहीं वेद पुरानन गाई है ।
धन्य राजा धन्य रानी सुनयना ऐसे मिले जमाई है ॥
धनि मिथिला धनि अवधपुरी की सुन्दर भई पहुनाई है ।
राखहु शरण सिया पिया मोहीं मंजु लता सुखदाई है ॥

अवध गृह प्रवेश पद कीर्तन पद ३४

लालन आये कुँवर चारो भाई हे ॥
रानी कौशिल्या केकयी सुमित्रा मातु सकल उठि धाई हे ।
मानो उमड़ि चले सुख सागर आनंद चहुँ दिशि धाई हे ॥
दुलहा दुलहिन देखि मातु सब जन्म सुकृत फल पाई हे ।
पुरबासिन सब देखहिं दुलहिन रूप राशि की निकाई हे ॥
आनंद अवध बधावा बाजे सरस राग शहनाई हे ।
चढ़ि विमान सुर सुन्दरी नाचति सुमन वृष्टि झरिलाई हे ॥
राई नोन उतारि मातु सब मंगल करि सुखदाई हे ।
गृह प्रवेश दुलहा दुलहिन करि मंजुलता बलि जाई हे ॥

तीर्थ पर्यटन पद झूमरा पद ३५

हे सजनवां हो तीरथ करिले विचार ॥
काशी प्रयाग गया जाके विश्राम करें चित्रकूट सबहिं पियार ।
द्वारिका रामेश्वर करि जगन्नाथ जाके करि बद्रीनाथ धामकेदार ॥
वृन्दावन हरिद्वार मुक्तिनारायण करि मिथिला अवधसुखसार ।
सबहिं तीरथ करि मनके मैल धोये शालिग्राम सीताराम अधार ॥

श्रीसीतारामजी का सप्त दिवस शृंगार वर्णन

शनिवार पद १

नील रङ्ग मणि होत नीलरङ्ग कमल होत,
नील रङ्ग श्याम घटा सुन्दर सुखदाई है।
चन्द्रिका मुकुट सिर कर्णफूल कुण्डल हार,
बेसर वो नासामणि हालन मन भाई है॥
नील रंग कुंचुकी औ नील रंग जामा सोहे
नील रंग सारी कटि धोती यों लगाई है।
नख सिख भूषन वो वसन सिंगार सोहे,
शालि ग्राम सीताराम यह गुन गाई है॥

रविवार पद २

गुलाबी रंग मणि होत गुलाबी रंग कमल होत।
सब फूलन में गुलाब रंग सुन्दर चटकार है।
चन्द्रिका मुकुट सोहे कर्ण फूल कुंडल मोहे
बेसर वो नासा मणि अति लहरदार है।
गुलाबी रंग कंचुकी गुलाबी रंग जामा सोहे,
गुलाबी रंग सारी धोती प्रीतम को प्यार है।
शालि ग्राम सीताराम दम्पति शृंगार सोहे,
जाके पद रज शीश बार २ धार है।

सोमवार पद ३

बदामी रंग मणि होत पुष्प हू बदामी रंग,
रंग ये बदामी सबही को शुभ कारी है।
चन्द्रिका मुकुट मणि कर्ण फूल कुंडल औ,
नासा मनि बेसर सुघर झब कारी है।
चोली है बदामी रंग जामा हू बदामी रंग,
सारी धोती माहिं तो बदामी की किनारी है।
सीताराम नख सिख भूषन सिंगार सोहे,
शालिग्राम युगल चरण बलि हारी है।

मंगलवार पद ४

अरुण रंग मणि होत अरुण रंग कमल होत,
अरुण रंग सबही को होत सुख कारी है॥
चन्द्रिका मुकुट सिर कर्ण फूल कुंडल सोहे,
बेसर वो नासा मणिसुन्दर झल कारी है।
अरुण रंग कंचुकी औ अरुण रंग जामा सोहे,
अरुण रंग सारी धोती कटि बीच धारी है।
नख सिख भूषन सिंगार लली लाल सोहे,
शालि ग्राम युगल चरण बलि हारी है।

बुधवार पद ५

हरित रंग मणि होत हरित रंग पुष्प होत,
हरित रंग सब ही को खूब ही सोहात है।

चन्द्रिका मुकुट मणि कर्ण फूल कुंडल सोहे,
वेसर वो नासा मणि सुन्दर झलकात है।
हरे रंग कंचुकी औ हरे रंग जामा सोहे है,
हरी रंग सारी धोती कटि में अमात है।
नख सिख भूषन सिंगार दोउ अंग सोहे,
शालि ग्राम सीताराम दोउ शुभ गात है।

गुरुवार पद ६

पीत रंग मणि होत कमल पराग होत,
पीत रंग मांगलिक सबै शुभकार है।
चन्द्रिका मुकुट सिर कर्ण फूल कुंडल पीत,
वेसर वो नासा मणि सुन्दर लहर दार है।
कंचुकी है पीत रंग जामा सोहे पीत रंग,
सारी धोती पीत रंग जड़ित किनार है।
नख सिख भूषन सिंगार सीताराम सोहे,
शालि ग्राम युगल चरण बलि हार है।

शुक्रवार पद ७

श्वेत रंग मणि होत श्वेत रंग कमल होत,
श्वेत रंग कुन्द होत पुरान श्रुति गाई है।
चन्द्रिका मुकुट श्वेत कर्ण फूल कुंडल श्वेत,
वेसर वो नासा मनि श्वेत झलकाई है,
श्वेत रंग वो कचुकी श्वेत रंग जामा सोहै।

श्वेत रंग सारी धोती कटि में लगाई है,

नख सिख भूषन सिंगार सीताराम सोहे।

शाली ग्राम युगल चरण मन भाई है,

दोहा-सप्त दिवस श्रृंगार यह जानिये चतुर सुजान।

मनन ध्यान पाठहु करे सिय पिय करें कल्यान॥

श्रीकिशोरी जी का श्रृङ्गार वर्णन पद ८

सियजूके सिर सोहे चन्द्रिका अरु चूड़ामणि,

बेनी माल कर्ण फूल बे..र झलकारी है।

गले कंठामनिहार मोतिन के लर सोहे,

फूलन के माला शुचि कंठ बीच डारी है।

बाजू बंद कंकड़ चूड़ी सोहाग बढ़ावन पूरी,

अंगुरिन में सुन्दर सुमुद्रिका सुधारी है।

कंचुकी वोसारी कटि कंड़ा छड़ा सोहा करे,

कमलादि ऊर्ध्व रेखा चरणों में प्यारी है।

श्रीराम जी का श्रृङ्गार वर्णन पद नं० ९

जाके सिर क्रीट वो मुकुट भाल केशर है,

कुण्डल वो नासामणि शुचि झलकार है।

गलेकंठा मणि हार मोतिन के लर सोहे,

फूलन के हार गले बीच सुख सार है।

बाहुवों में अंगद कड़ा हैं कलाइयों में मंजु है,

अंगुरिन में मुंदरी औ धोती कोरदार है।

शालिग्राम जाके चरण में चिन्हशुचि,
ध्यान किए भक्त लोग होते भवपार हैं।

श्री तुलसी महारानी की महिमा पद १०

तुलसी महरानी से सभी सुभ कार्य होत,
तुलसी महारानी श्री विष्णु पटरानी हैं।
तुलसी महारानी से पूजन वो पाठ होत,
व्यंजन में डारि भोग लागै सुखदानी है।
तुलसी महारानी से यज्ञ आदि शुद्ध होत,
लोक परलोकन में पूर्ण कल्याणी है।
शालिग्राम सीताराम तुलसी की महिमा को,
वेद औ पुरान से श्रेष्ठतर ही बखानी है।

भक्ति महारानी का वर्णन पद ११

भक्ति महारानी भक्त जन सुखदानी शुचि,
प्राण प्यारे प्रभुकी पियारी पटरानी है
ऋद्धि सिद्धि आदि नवनिधि करजोरि खड़ी,
सेवा याचना के लिए सभी सुख दानी है।
इनकी कृपा से प्रभु सेवा सुख प्राप्त होत,
मगन हो द स दिव्य होता वही प्राण है।
भक्ति महारानी हैं प्रमानी तीनों लोक बीच,
शालिग्राम मुझको तो सब सुख खानी हैं।

भावादर्श कवित्त १२

भाव ही के वश भगवान भक्त वश होत,
भाव ही के वश प्रभु प्रगट दिखाई हैं।
भाव ही के वश चक्रबर्ति के पुत्र भये,
भाव ही कौशिल्या अम्बा गोद में खिलाई है।
भाव ही के वश जाके सुन्दर स्वरूप धरे,
भाव ही के बश भये जनक जमाई है।
भाव ही के वश सबही के कल्याण करें,
भाव ही के बश शालिग्राम से कहाई है।

खेमटा पद ३६

मन लागि रहे राम के चरनियां में।
जेहि चरनन से गंगा प्रगट भई त्रिभुवन तारन धरनियां में।
सोइ चरनन से अहिल्या उधारे अस्तुति कीन्हि सब्रनियां में।
जिन चरनन को जनक नृप धोये होत होत हृदय हरषनियां में।
शालिग्राम के सियवर स्वामी राखहु चरन शरनियां में।

श्री सीताराम शृङ्गार वर्णन मंगलवार ३७

ललीलाल के सिंगार सोहे लाल २ हो।
चन्द्रिका मुकुट लाल कर्ण फूल कुण्डल मनि लाल २ हो।
बेसर वो नासामनि अति लहरदार लाल अधरन की लाली लाल २ हो। कंचुकी वो जामा लाल सारी कटि धोती पहिने लाल २ हो। शालिग्राम सीताराम चरण कमल में महावर सोहे

ललित लाल २ हो।

दो० अरुण सिंगार दर्शन करे प्रेमी जन जो कोई।
पुरै मनोरथ वाहि को जन्म सुफलता होई॥

बुधवार ३८

दोऊ हरित सिंगार सोहे हरे २ हो,
चन्द्रिका मनि मुकुट सोहे कर्णफूल कुंडल मनि हरे २ हो। वेसर वो नासा मनि अति लहरदार हरे मृदु मुसकान सुन्दर हरे २ हो। कंचुकी वो जामा हरे सारी धोती कटि पहिरे हरे२हो। शालिग्राम सीताराम नख सिख सिख सिंगार हरे चहूँ दिशि-संगल हरे २ हो।

दो० हरित सिंगार दर्शन करे पुरवे सब मन काम।
लोक बने परलोक में मिलि जैहै सियाराम॥

गुरुवार पद ३९

युगल पीतरङ्ग सिंगार सोहे पीले पीले हो।
चन्द्रिका मनि मुकुट पीले कर्णफूल कुण्डल मनि पीले २ हो, वेसर वो नाशामनि सुन्दर लहरदार पीले दोउ गलेकंठमनिहार पीले पीले हो। कंचुकी वो जामा पीले सारी धोती कटि पहिने पीले पीले हो, शालग्राम सीताराम नख सिख सिंगार पीले चहुँ दिशि आनंद छाई पीले पीले हो॥

दोहा-पीत रङ्ग माँगलिक शुभ, सुख उपजावत सोइ।
पीत रङ्ग दर्शन करे, जन्म सुफलता होइ॥

महर्षि वाल्मीकि ... 15531 अयोध्या श्री मणिराम दास छावनी सेवा ट्रस्ट

शुक्रवार पद ४०

सिया पिया के सिंगार सोहे श्वेत रङ्ग हो ।
चन्द्रिका मनि मुकुट श्वेत कर्णफूल कुण्डल मनि श्वेतरङ्ग हो,
बेसर नासामनि श्वेत गले कंठाहार श्वेत अङ्ग हो ।
कंचुकी वो जामा श्वेत सारी धोती कटि श्वेत जङ्ग हो,
शालिग्राम सीताराम कड़ा छड़ा नूपुर श्वेत रसराज सन हो ॥

दोहा-श्वेत श्वेत सब श्वेत हैं, श्वेत सबहिं को हेत ।
श्वेत रङ्ग शुभदायक, सबही को सुख देत ॥

शनिवार पद ४१

कैसो नीले रङ्ग सिंगार प्रिया प्रीतम प्यारे हो ।
चन्द्रिका मणिमुकुट नील कर्णफूल कुण्डलमणि नील धारे हो,
बेसर नासामनि नील गले कंठहार मनि नील हारे हो ।
कंचुकी वो जामा नील सारी धोती नील सोहे जरीदार हो,
शालिग्राम सीताराम नखसिख सिंगार नील अद्भुत छबि ध्यान धारे हो ॥

दोहा-नील नील मणि नील धर, गौर श्याम सुख धाम ।
सियाराम दरशन करे, पुरवे सब मन काम ॥

रविवार पद ४२

आज कैसो दोउ गुलाबीरङ्ग सिंगार सोहे ।
चन्द्रिका वो मुकुट मनि कर्णफूल कुण्डल मनि बेसर नासामनि

१५५३।

गुलाबी लहरदार सोहे हो, चन्द्रहार पदिक हार गले कंठामनि गुलाबी हार सोहे हो। कंचुकी वो जामा सोहे सारी धोती पहिने गुलाबी जरीदार हो, शालिग्राम सीताराम नख सिख गुलाबी रङ्ग युगल सरकार सोहे हो॥

दोहा-सब फूलन में रतनमणि, कमल गुलाबहिं जान।
सियाराम दरशन करे, सदा करैं कल्यान॥

सोमवार पद ४३

दोउ बदामी रङ्ग सिंगार सोहे कैसो झाँकी हो। चन्द्रिकामणि मुकुट सोहे कर्णफूल कुण्डलमनि बेसर नामामनि लहरदार ताकी हो, चन्द्रहार पदिकहार गजमोतियन हार सुन्दर गौर श्याम मंद मुस्कार जाकी हो। कंचुकी बो जामा बदामी रङ्ग सोहाकरे सारी धोती पसिने जरीदार वांकी हो, शालिग्राम सीताराम नख सिख बदामो रङ्ग युग अद्भुत छटा की हो॥

दोहा-सप्त दिवस शृंगार रंग कीर्तन करे जो कोइ।
सिय पिय सदानुकूल तेहि दर्शन सब सुख होइ॥
भ्रमण करे चहुँदिशि कमल पराग रसलते।
प्रेमी जन विहल फिरैं सिय पिय दर्शन हेत॥
परा पश्यन्ति मध्यमा वैखरी नाम उचार।
प्रान जीवन सबके धन युगल नाम आधार॥

होली राग बसन्त पद ४४

सखि आये बसन्त ऋतु होरी हो होरी।

खले प्रमोदबन लतातरु कुंज द्वारे चहुँ दिशि आनंद ओरी होहरी
उतसखा इनसखी समाजहिं दोउ भरि पिचकारीरंग बोरीहोहोरी
एकसखी ने पकरि लालको मसलि गुलाल सुरोरी हो होरी।
सबदिन कसरि चुकाऊं लालन मंजुलता मुख मोरी हो मोरी

पद ४५

कैसो होरी सिया पिया संग होरी हो।
एक ओर सखा दुसर ओर सखियां दोउदल सुन्दर जोरी हो।
उड़त गुलाल लाल भये बादल सूझन कवनिउ ओरी हो॥
एक सखी करपकरि लालको मसलि गुलालन रोरी हो।
दूसरसखी पकरि कुंवर को कैसी मचाई अंधरी हो॥
बेंदी भाल नयन काजर करि सुन्दर बनाई गोरी हो।
सब सखिगन मिलि नाच नचावहिं देखहिं राजकिशोरी हो॥
सिय स्वामिनि आगे हार लिखाऊँ तब देऊँगी छोरी हो।
सबदिन कसर चुकाऊं आजमैं मंजुलता बरजोरी हो॥

पद ४६

लालन फागुन भर होरी खिलाए जांयगे।
अबीर गुलाल कुमकुमा केसर गालन मसलि लगाये जाँयगे।
बिंदी भाल नयन काजर करि नक बेसर पहिनाये जाँयगे॥
सुन्दर सारी ओढ़ाय कुंवर तोहि लाला से से लली बनाये जाँयगे
मंजुलता बाहद बाहरे गोरी सखियन साथ नचाये जाँयगे।

होली पद विनोद ४७

हो सिया पिया कैसी धूम मचाई।

इत सखियन उत सखा संग दोउ दल जुटे समुदाई।
इत उत फाग परस्पर खेलहिं शोभा बरनि न जाई।
उड़त गुलाल लाल भये बादल नभ मंडल रहे छाई।
पकड़ो २ राजकुंवर को भाग न जाय चतुरकहाई।
एक सखी ने पकरि लाल को मसलि गुलाल लगाई।
सबदिन कसर चुकाय आज मैं नारि बनाय नचाई।
असि होली कहुँ सुर पुरादि में देखन कोऊ नहिं पाई।
धनि मिथिला धनि अवध पुरी की शालिग्राम सुख छाई॥

श्री सीताराम बाग विहार चैती पद ४७

बिहरत दोउ कनकभवन फुलवरिया हो रामा।
चम्पा चमेली गुलाब की कलियां सुन्दर खिली हैं नेबरियाहोरामा
शीतल मंद सुगन्ध पवन बहै हरे २ वृक्ष किनारिया हो रामा॥
कोई लिए छत्र चंवर कोई व्यञ्जन कोई लिए पान अंतरियां
हो रामा गोरे श्याम सुख धाम मनोहर मंजुलता बलिहरिया
हो रामा।

पद ४८

बिहरत बाग में राज कुंवर धनु धरिया हो रामा।
बाम भाग श्री जनकनन्दनी सुन्दर जोड़ी मनहरिया होरामा।
जगमग ज्योति चहुँदिशि छाये करत प्रकाश फूलबरिया होरामा।
चुनि २ कलियों के हार बनावहिं प्रिय प्रीतम गलेडरियाहोराम।
अद्भुत छवि देव कहं लगि बरणौं मंजुलता बलि हरियाहो राम।

पद ५०

मन मेरो लहरी चाहत प्रभु दरशनवां हो रामा ।
नहिं जप जोग संयम समाधि नहिं कछु करत सधनवां हो रामा,
काम क्रोध मद लोभ मोह, बश सूझ न एको ठिकनवां हो रामा ।
अबहिं से चेत करो मन मूरख छाड़ कपट अभिमनवां हो रामा,
शालिग्राम के सियबर स्वामी निशदिन करूँ सुमिरनवां होरामा ॥

फूल बँगला के पद ५१

फूल बँगले में सिया पिया दोउ राजैं ।
सुमन चन्द्रिका सुबरण मुकुट सिर सुमन सिंगारहिं तन साजैं,
गौर श्याम सुख धाम मनोहर रति पति मौन रहैं छवि लाजैं ।
इतर सुगन्ध फुहारा चलतहिं वीणा सितार मृदंगहि साजैं,
शालिग्राम दोउ सरन जीवन मेरे तन मन धन अर्पण प्रभु काजैं ॥

पद खेमटा ५२

फूल बंगले में सियापिया कैसी झाँकी ।
हरित मोतिन की जड़ित किनारी बेलि गूंथी मुक्ता की,
शीश चन्द्रिका मुकुट सुमन को वसन भूषन सोहे जाकी ।
इतर सुगन्ध का चलत फुहारा साज बाज बहु नृत्य कलाकी,
शालिग्राम छवि कहं लगि बरणौं अजब छटा अति बांकी ॥

झूला पद ५३

झूलन पर झूलें राघव बिहारी ।

बाम भाग श्री जनक नंदनी अंशन दोउ भुज डारी।
बन प्रमोद आनन्द चहूँदिशि हरे २ बिपिन मझारी।
झूलत रङ्ग उमङ्ग परस्पर अलिंगन झोंका मारी.
शालिग्राम सुखधाम राम सिय जन के सदा हितकारी॥

पद ४५

झूलन पर झूलत अवध बिहारी।
रतन जड़ित मणि खंभ गड़े हैं सुन्दर अजब बहारी,
आस पास परिकर सब ठाढ़े बाम भाग सिय प्यारी।
झूलत रङ्ग उमङ्ग मुदित मन अलिंगन झोंका मारी,
शालिग्राम युग प्राण जीवन मेरे तन मन धन बलिहारी॥

पद कजरी ५५

झूला लग्यो अवध में प्यारे झूलत अवध बिहारी ना।
सावन घन घमंड नभ छाये बरसत बूँद फुहारी ना॥
मोर चकोर पपीहा बोले दादुर शब्द उचारी ना।
बाम भाग श्री जनक नन्दनी राजदुलारी प्यारी ना॥
शालिग्राम दोउ प्राण जीवनधन तन मन धन बलिहारी ना॥

पद ५६

जय २ अवधपुरी सुखधाम सरयू पतित पावन है नाम।
दरस परस मज्जन के करतहिं सब हरत रोग भव धाम॥
काशी प्रयाग कोटि तीरथ करें सरयू करो विश्राम,

योग तपस्या कर्म करै बहु सो फल देय अवध मन काम।
वेद पुराण बखानत महिमा पार न पावे शालिग्राम॥

झूला पद खेमटा ५७

झूला झूलत सिया संग नवल रसिया।
सुन्दर श्याम कमल दल लोचन जुलफन जाल बझाते फँसिगा,
झूला झूलत रूप निहारत तिरछी नजरिया से मारे गांसिया।
आस पास सखियन छबि निरखत प्रीति छटा तन मन लसिया,
मंजुलता दोउ छबि पर वारौं तन मन धन अर सर वसिया॥

पद ५८

झूला झूलत पिया सङ्ग सुघर धनियाँ।
उमा रमा ब्रह्माणी निशदिन दम्पति चाहत रज कनियाँ,
शीश चन्द्रिका मुकुट मनोहर कर्णफूल कुण्डल कनियाँ।
बसन सुभूषन नख सिख राजित अतुलित छबिके दोउ धनियाँ,
शालिग्राम सुख धाम राम सिय विसरत मोहि पलक छनियाँ॥

कजरी पद ५९

झूला झूलि रहीं सिय प्यारी झुलावत राज दुलारे ना,
सावन सुभग सुहावन चहुँदिशि हरे हरियारे ना।
दामिनि दमके चपला चमके बरसत बूंद फुहारे ना,
शीश चन्द्रिका मुकुट झलाझल सुन्दर अति उजियारे ना।
शालिग्राम सुख सम्पति दम्पति मेरे प्राण अधारे ना॥

पद ६०

लली लालन को झूला झुलाए जाँयगे,
सावन में आनन्द मनाये जायगे।
गौर श्याम सुख धाम मनोहर प्यारे मनमें बसाये जाँयगे,
साज बाज सारंगि सितारहिं तान रसीले सुनाये जाँयगे।
शालिग्राम युग प्राण जीवन धन जीवन सुफल कराये जाँयगे॥

पद ६१

रसना मानो रे कहनवां मनुवां भजले सीताराम,
घरी घरी में पलक पलक में का होइहैं परिणाम।
यह तन पुतला कांच का भाई। गिरतहि होत नकाम,
दुनियां दौलत,माल खजाना रहि जैहैं धन धाम।
शालिग्राम दोउ प्राण जीवन धन सुन्दर गौरहि श्याम॥

कजरी पद ६२

झूला झूलत प्रभु सुख राशी घट २ बासी रे हरी,
रमु क्रीड़ामें सबहिं रमावत अज अविनाशी रे हरी।
बिश्व विश्वम्भर बिश्व विमोहन सबको करत प्रकाशी रे हरी,
यह संसार पतंग सम कीड़ा खैचत उड़त अकाशी रे हरी।
शालिग्राम सुख धाम रामसिय हमरे यही उपासी रे हरी॥

पद ६३

आये सावन के बहार कैसी सुन्दर लहरदार ।झूला झूले सिय पिय के सजनवां ना। घटा घेरे घन घोर दादुर बोले नाचे मोर

शीतल मंद २ बहेला पवनवां ना। झूला झूले रघुवीरी देखो श्याम गौर जोरी सखियां मारे झोकाझोरीं दोऊ मंद २ मुस्कनवां ना। झूलै युगल सरकार शोभा अपरम्पार रतिपति छवि लजित भवनवां ना। कजरी गावै शालिग्राम प्यारे भजले सीताराम मेरे सर्वस प्राण जिवनवां ना॥

पद ६४

झूला झूलत राम रंगीले रसिया।
सुन्दर श्याम कमल दल लोचन सुर नर मुनि के मनवसिया। बाम भाग श्रीजनक ललीजू निरखत छटा मधुर हंसिया। आस पास अलिगन सब ठाढ़ी मारत झोंका झमकि फंसिया। शालि-ग्राम दोऊ प्राण जीवन धन निश दिन गोऊ मैं तेरो जसिया।

पद ६५

मेरी लगी सुरत की डोरी प्रभु जी तेरी चरनियां ना। काम क्रोध मद लोभ मोह वे पांचो करत हरनियां ना। नहिं विद्या नहिं बुधि चतुराई नहिं कछु कर्म करनियां ना। भव प्रवाह में बूड़त दयानिधि करगहि अभय करैया ना। शालिग्राम सुख धाम राम सिया चाहत युगल चरनियां ना॥

झूला पद अर्ध कजरी ६६

आई सावन की बहार कैसी सुन्दर लहर दार दोऊ झूलें सरकार झुलनवां में। घटा घेरे घन घोर बोले दादुर पपीहा मोर कैसो झांकी बांकी प्यारे दर्शनवां में। सखिया मारे झोंकाझार प्रिया प्रीतम को निहार दोऊ मंद २ मधुर मुसकनवां में। कजरी गावें

शालिग्राम यह है सीताराम नाम जाको सुर नर मुनि धरैं ध्यनवां में। आई सावन की बहार कैसी सुन्दर लहरदार दोऊ झूलें सरकार झुलनवां में॥

झूला पद अर्ध कजरी पद ६७

आई सावन की बहार जुगल झूले सरकार कैसी झांकी बांकीनिरखु झुलनवां में॥ टेक॥

हरे हरे चहुँ ओर वन में बोले पपीहा मोर घटा दम दम दमके दामिनि चमकनवां में। वरषे बून्द फुहार बहे त्रिविध वयार सरजू बढ़ी हैं आनन्द मगनवां में॥ सखियां मारे झोंका झार शोभा अपरंपार कैसी गौर श्याम सुन्दर बदनवां में। कह सालिग्राम विचार लाजे रति कोटि मार छवि कहां लगि करौं गुन गनवां में॥ आई सावन की बहार झूले जुगल सरकार कैसी झांकी बांकी निरखु झूलनवा में॥

पद ६८

झूला झूलत अवधबिहारी संगमें राजदुलारी ना।
रतन मंडप मणि झूला बनो है हरे२ जड़ित किनारीना।
सीतल मंद सुगन्ध पवन बहै बरसत बूंद फुहारी ना।
आस पास परिकर सब ठाढ़े मारत झोंका भारी ना।
शालिग्राम सुखधाम राम सिय तन मन धन बलिहारी ना।
झूला झूलत अवध बिहारी संगमें राजदुलारी ना।

कीर्तन झूलन पद खेमटा ६९

झूला झूलन पर झूलत युगल सरकार।

शीश चन्द्रिका मुकुट मनोहर कर्ण फूल कुण्डल के अजब बहार ॥ झूला ॥ वेन्दी भाल तिलक केशर प्यारे बेसर वो नासामणि सुन्दर लहरदार ॥झूला॥ कंचुकी जामा पहिरे गुलाबी सारी वो धोती पहिरे कोरदार ॥झूला॥ शालिग्राम दोऊ प्राण जीवन धन सर्वस मेरे आधार ॥ झूला ॥

दोहा-सावन सुभग सुहावनो झूला अजब बहार।
सिय पिय के दर्शन करें गौर श्याम उर धार॥

श्री सीताराम जीके पद खेमटा ७०

आई सुन्दर प्यारी शरद ऋतु चांदनी ॥टेक॥

बन प्रदेश चहुँदिशि हैं प्रकाशित कुंद कली कुंए एक खेलें कामिनी ॥ आई ॥ प्रीतम स्वामि घटा सम शोभित प्यारी अनु चम्पा कली द्युति दामिनी ॥ आई ॥ रास मंडप दोऊ देत भंवरि यावाम भाग अनसन सिया स्वामिनी ॥ आई ॥ मञ्जुलता छोड़ छवि परवारौं तन मन अरपन धन धामिनी ॥ आई ॥

पद ७१

आई सुन्दर प्यारी शरद ऋतु रतिया ॥

चहुंदिशि चांदनी छिटक रही है आनन्द वरसत मोतियां।
राम मंडप में वेगि पधारहु संग लिए सब प्रिय गन सखियां॥
नृतत अलिगन रास मंडप में भाव देखावहिं रस की बतियां।

रमतरास रस रमन बिहारी मंजुलता सबके सुखसथियां ॥

पद ७२

चलो सुन्दर प्यारी रामसुख दाई रे ॥ टेक ॥
बिना सितार झांझ मृदंगहि सरस राग शहनाई रे ॥
रास रचहुसब अलिमिलि के दै गल वाही मन भाई रे ।
रास रहस में रमत बिहारी आनंद धूम मचाई रे ॥
मंजुलता दोउ छबि पर वारौं तन मन धन बलि जाई रे ।

पद ७३

लगा रहे नाम सुरति की डोरी
शीश चन्द्रिका मधुरमनोहर जगमग ज्योति करे चहुँ ओरी ॥
अद्भुत छटा धरा संग दामिनी वैसे श्याम गोरे दोउ जोरी ॥
दृगन कटान हंसनि मृदुमाधुरी चितवत रहतजिमिचन्द्र चकोरी
शालिग्राम सुखधाम रामसिय विसरयोनपलछिन निशदिनभोरी

पद ७४

दिन चार के लहरुवा फिर जग सपना ॥ टेक ॥
बालापन खेल मस्त जवानी गये बृद्ध भये घर घर कपना ॥
दुनियां से दौलत माल खजाना अन्त समय नहिं कोऊ अपना ॥
काल बली तोरे शिर पर नाचै चाहत छिन कर अपना ॥
शालिग्राम सुख धाम राम सिय निश दिन नाम वही रहना ॥
पद खेमटा ७५

अजब लीला तेरी राघवबिहारी ॥

मच्छ कच्छ बाराह नृसिंह हुए जन प्रह्लाद के हितकारी ॥
बावनभृगुपति राम रूप धर रावन दुष्ट संहारन हारी ॥
कृष्ण रूप धरि कंश को मारी उग्रसेन सिरछत्र धारी ॥
शालिग्राम प्रभु नाना रूप धरि चरण शरण तेरी बलिहारी ॥

सखा प्रति वचनपद झुमरा ७५

ए सजनवां हो बीरन में राम जी सरदार ॥ टेक ॥
प्रथम ताड़का मारे गौतम की नारी तारे, शिव धनु तोड़े सुकुमार। ए सजनवां ॥ भूपके मान मारे परसुराम के गर्व हरे ॥ ब्यारे सिया सुन्दर नार। ए सजनवां। लंका में पायन किया, रावन को मार दिये सुरनर मुनि हितकार ॥ एसजनवां० ॥ शालिग्राम सीताराम अचल है कीरत नाम, रघुकुल मुनि उजियार। ए सजनवां०।

सखी प्रतिवचन पद ७६

सुनले सजनी सीताराम जी के मनवां लगाय। टेक।
बड़े भाग बड़े योग के जन्म पाये जन्म सुफल हो जाय ॥
मातु पिता स्वामी सुत बान्धव परिवार सब स्वारथ में रहे लपटाय। पल छिन बिसरो नहि भूलो नहिं आठोयाम सिर पर काल रहा मंडराय, शालिग्राम सिया पिया प्राण के जीवन धन निश दिन ध्यान लगाय ॥ सुनले० ॥

मन चेतावनी पद ७७

छाड़ दे मन मेरे भ्रम के भटका ॥ टेक ॥

यह संसार असार है माया मोह जाल का लटका,
काल बली तेरे शिर पर नाचे चाहत छिन में गटका।
गौर श्याम मन मोहनि मूरति भज ले सुन्दर हटका,
शालिग्राम सुख धाम राम सिय जन्म मरन से छूटे खटका॥

झाँकी पद ७८

प्यारी कैसी गौर श्याम सुन्दर झाँकी रे।

इत चन्द्रिका शिर कर्ण फूल लटक वेसर की, उत क्रीट कुण्डल नासा मनि भाल तिलक केशर की। दोउ मन्द मधुर मुसकाकी रे इत चन्द्रहार मणिनहार मुक्तामनी खासी है, उत कंठा मनि पदिक हार पुष्पमाला राजी है। दोउ चितवनमें चितको चोराकी रे॥ इत कंचुकी वो सारी सब भूषन को संवारी है, उत जामा ओ धोती जड़ीदार वो किनारी है। दोउ अजब छटा छवि बांकी रे, शालिग्राम सीताराम नहिं भूलो आठोयाम दोउ हृदय कमल में बसाकी रे॥

मन चेतावनी पद खेमटा ७९

दिनवां बीतल जाला प्यारे तेरे झगड़े में,
दिनभी बीते रातभी बीते खबर नहीं काया नगरे में,
काम क्रोध मद लोभ मोह वश प्रबल शत्रु के रगरे में,
राम सिया से परिचय करले अवध पुरी के डगरे में,
शालिग्राम युग नाम जीवन धन नाम रटन सुख सगरे में,
दिनवां बीतल जाला प्यारे तेरे झगरे में॥

मन चेतावनी पद ८०

मनवां भूलि गइले माया के बजरिया में,
बालापन खेल खोय मस्तमें जवानी गये बूढ़ भये कंपमान सूझे न नजरिया में, हाथो घोड़ा दुनियां दौलत माल खजाना सब लोभवाले लालच फंसरिया में। अबहिंसे चेत करो काहेके अचेत भयो सिया पिया भजिले सबेरिया में, शालिग्राम सीताराम भूलो न पल छिन सब कर यहि सित करिया में॥ मनवां०॥

गजल पद ८१

राघो हमारे प्राण प्रीतम चितवन में चितको चुरालिया,
सांवली सूरति मोहनी मूरति माधुरी रूप चखा दिया।
मन्त्र न यन्त्र न जादू टोना मन पंछी को फँसा लिया,
दिन नहीं चैन रैन नहीं कल परे बावरीसी मुझको बना दिया।
शालिग्राम के सर्वस धन प्रभू बिसरो न पलछिन सियापिया॥

प्रार्थना पद ८२

खबरिया लीगे स्वामी मेरी बूड़ल जाला नैया।
नहिं कोइ हात मीत सम्बन्धीं नहि कोइ सङ्गी सिवैया,
भव जल नदिया अगम बहै धार तुम बिना कौन मोहरैया।
सत कर नैया सुकृत करवरिया खेले वाला तुही रघुरैया॥
शालिग्राम प्रभु प्राण जीवन धन कर गहि लेव अपनैया॥

पद इश्वजं बिनोद ८३

कैसी दुनियां के गुलशन बहार रे।
सात द्वीप नव खंड बनावा तिसमें रचना अपार रे,

गङ्गा यमुना नर्मदा सिन्धु श्रीसरयू अवध किनार रे।
छप्पन भोग छतीसो व्यञ्जन बनी विविध तरह के अचार रे,
शालिग्राम सिया पिया रुचि भोजन सबके प्राण अधार रे॥

पद ८४

प्रभु लीला है अगम अपार रे।
ब्रह्मा सृष्टी विष्णु करें पालन शंकर करे सङ्घार रे।
चन्द्र सूर्य दिन रात बनाया सब कर्म धर्म व्यवहार रे॥
इन्द्र कुवेर पवन यम कालहिं सब आज्ञा में खड़े तैयार रे,
शालिग्राम सुख धाम सियावर करे सबके सदा हितकार रे॥

प्रभू की माया पद कीर्तन ८५

भगवान तेरी माया है बड़ी छलिया।
शिव विरंचि के नाच नचाये नारदमुनि छल भलिया,
सात द्वीप नौ खंड में छाये सब घर गलिया।
राजा से रङ्क फकीर लोभाये और बचे कौन हलिया,
शालिग्राम सियाराम भरोसे प्रभू चरणशरणमें तुम्हारे बलिया॥

मरने का एक दोहा दृष्टांत ८६

दोहा नामी मरत है नाम में कामी मरत है काम।
सन्त मरत हरि भजन में, सुमिरत सीताराम॥

पद प्रार्थना पूर्बी ८७

मेरे भगवान हो काहे के बिसरली अपनी दाया।

काम क्रोध मद लोभ अधिक सतावे मोह घेरे बहु माया,
हम अनाथ के नाथ तूही प्रभु श्री पति श्री रघुराया।
असरन शरन पतित पावन सुनि लेहु मोहि अपनाया,
शालिग्राम सीताराम बिसरो न पलछिन निशदिन तेरे गुणगाया।

पद पूर्वी ८८

मेरी सिया जू हो लीजे तू मोहि अपनाई।
लख चौरासी भरमि जन्म को बितायो बहु तबहूँ न कहूँ सुख पाई,
असरन शरन विपति दुःख हरन राखहु अपनी बिरद बड़ाई।
कठिन तपस्या जोग साधन अनेक करे तेते बिना प्रभू न सोहाई,
शालिग्राम प्रीतम प्यारे निश दिन अवलोकत तोहि कृपा दृष्टि को जनाई॥

शरणागती दृष्टांत दोहा ८९

कृपा रूपिणी श्री जानकी कृपा रूप रघुनाथ।
शरन देखिजो जीव को अभय करन सनाथ॥

आज काल के जामाना पद ९०

कैसा आज काल जमाना बदल गया हो। १।
बाद बिवाद में निशिदिन बीते,
बृथा जन्म बर्बाद किया हो॥ २॥
पुरुष के वसन भूषन नारी पहने,
नारी के पुरुष पहन लिए हो॥ कैसा० ॥
वेद पुराण संत नहीं माने चौपटनाथ अन्धेरे गया हो,

शालिग्राम सियाराम भजन करो।
कैसा समय विपरीत आया हो,
कैसा आज कल जमाना बदल गया हो

श्रीराम जी के कर कमल के महत्व बर्णन ६१

जाही हाथ राम जी ने शंकर धनुष तोड़ विश्वबिजयी रतन वो सीता को पाये हैं। जाही हाथ राम जी ने खरदूषन औ त्रिसरा चौदह सहस्त्र को बिध्वंस किए दंडकारण्य निवासिन क्लेश को नशाये हैं॥ जाही हाथ राम जी ने रावण का संहार किए धरणी भार हरे विभिषन को तिलक करी राज को दिलाये हैं शालिग्राम सीताराम हस्त कमल पाया चहत वाही हाथ मेरे माथ भरत से भेंटे प्रभु अंक में लगाये हैं॥

श्री युगल नाम महत्व बर्णन ६२

सियाराम नाम सुमिरन से सकल अमंगल को मंगल कर देत भवरोग नष्ट जात है। सियाराम नाम सुमिरन से देव ऋण पितृ ऋण गुरु ऋण और ऋण से उऋण होइ जात हैं। सियाराम नाम सुमिरन से लोक परलोक बने अर्थ धर्म काम मोक्ष सबही बनि जात हैं। शालिग्राम सीताराम भजिले तू युगल नाम गौर श्याम सुन्दर से दर्शन होइ जात है।

नाम महिमा ६३

नाम ही प्रताप शेष धरणी को धारण करें नाम ही प्रताप शिव अमरता को पाये हैं। नाम ही प्रताप गणपति पद पूजा पाये नाम

ही प्रताप घटज सिन्धु को सुखाये हैं। नाम ही प्रताप बाल्मीक व्यास कबी भये नाम ही प्रताप हनुमान बलवान जाके लंका को जराये हैं। शालिग्राम सीताराम वेद औ पुरान कहैं नाम ही प्रताप तिहुँ लोक यश पाये हैं ॥

सवैया ६४

मन चेत करो तू अचेत भयो ममता मद लोभ रहे बहुराई।
बड़ भाग से मानुष जन्म मिला पुनि अवसर नाहिं मिले तेरे भाई
यह भारत खंड हैं कर्म भूमि कछु कर्त्तव्य करलेहु कर्म कमाई।।
शालिग्राम कहे सब काम तजि सिया राम भजे सबही सुख पाई

मन तरंग रुपक सवैया ६५

कबहीं मन रंग तुरंग चढ़े कबही मन जीवन लाभहि सोचत,
भाई कबही मन समर में जंग कसे तरवार लिये सूरबीर कहाई
कबहीं मन राजा से रंक भये कबहीं मन होत फकीर की नाई,
शालिग्राम कहे सियाराम भजे जग में सब है सबही को भुलाई

कवित समिष्टी ६६

जाति औ पांति नहिं बर्ण वो विचार देखत,
नाम की ओट लेत शरण में लगाते हैं।
बड़े के बड़ाई नहिं छोटे के छोटाई देखत,
भक्ति के प्रेम बश प्रभु अपनाते हैं।
वेद और पुरान षट शास्त्र में पुकार कहें।
पतितन के पावन नाम वाको यश गाते हैं।

शालिग्राम सीताराम भजिले मन गौर श्याम,
नाम लेत जन्म मरन सबही छुटि जात हैं।।

नाम संकीर्तन पद ६७

नाम बाजे ला डंका बधाई के ।। टेक ।।
ध्रुव प्रह्लाद बिभीषन के बाजे सेबरी ने फल को खाई रे।
गणिका अजामिल गीध के बाजे पवन हराम कहाई रे।।
सूर कबीर तुलसी जी के बाजे औरो सदना कसाई रे।
शालिग्राम प्रभु नाम महातम कह लौ कहौं गुन गाई रे।।

श्री पद ६८

गहोरा बासनी प्रतिबचन पूर्बी

बटुहिया सजनी चित के हरैया मेरे परनबां। टेक।
सगवा में सुन्दर नारी गोरे, श्याम जोड़ी प्यारी
रति पति कोटि लजनवां ।। बटुहिया० ।।
हीया-कित दुर गइले बटोहिया, कहावां भेटै इहैरैया।
बिना देखे परेन चयनवां बटोहिया,
तीनु कोमल गात केसे सहैया धूप बात
कठिन कलेश बनाके रहनवां। बटोहिया।
शालिग्राम सीताराम बिसरेन आठो याम निशिदिन बसे
मोहि ध्यानबा। बटोहिया सजनीचितके हरैया मेरे प्रनवां

पुर्बी पद ६९

गहोरा बासिनी प्रति बचन पूर्बी,

निरखु प्यारी कित दूर गइले साबर जोगिया।। १।।

माता पिता बनवास दीह्ले बिधि बिपरीत कइले,
संग लिये राज कुमारी ।। निरखू प्यारी ।।
जंगल पहाड़ भारी कठिन भयंकरकारी
तापर बहुत बयारी ।। निरखू प्यारी ।।
कंटक मारग देश थोरे दिन उमिरिया बेश
कोल भील मिलिहे गवारी ।। निरखू प्यारी ।।
शालिग्राम ध्यान यह निशि दिन राखे नेह
शिव सरबस उरधारी ।। निरखू प्यारी ।।
कित दूर गइले सांवर जोगिया

❀ पद प्रार्थना १०० ❀

रघुनन्दन हो काहे बिसरनी अपनी दाया ।। टेक ।।
काम क्रोध लोभ घेरे, विरह अग्नियां जरे
चहूँ दिशी माया ।। रघुनन्दन हो ।।
लख चौरासी भोगाई, कतहूँ ना सुख को पाई
कर्म डण्ड बिपति सताया ।। रघुनन्दन हो ।।
जिनके दयालू स्वामी, घट घट के अन्तरयामी
श्रीपति श्रीरघुराया ।। रघुनन्दन हो ।।
शालिग्राम सीताराम विसरू ना आठोयाम
लीजे शरण मैं अपनाया ।।
रघुनन्दन हो काहे विसरनी अपनी दाया ।।

❀ पद कीर्तन १०१ ❀

रघुनन्दन से लागी सुरतिया हो ।। टेक ।।
सुन्दर श्याम कमदललोचन आनन्द रूप मूरतिया हो ।

आरती हरख शरण सुखदायक भवभञ्जन विपतिया हो ॥रघु०॥
सप्तदीपनो नौखंड के स्वामी सबके जीवन गतिया हो ॥रघु०॥
सालिग्राम सुख धाम सियावर बिसरे न मोहीं दिन रतिया हो
रघुनन्दन से लागी सुरतिया हो।

❀ पदकीर्तन १०२ ❀

दिहे कबजी रामजी मोहीं दरशनवां हो ॥ टेक ॥
माथे मुकुट सोहे स्रवनन कुण्डल भाल में केशर चन्दनवाँ हो ॥दिहे॥
सुन्दर श्याम हरण मनमोहन मन्द मधुर मुसुकनवां हो ॥रामजी
गर कण्टामनी पदिक लरनउर कर कमलन धनुबनवां हो ।रामजी
कछनी पीताम्बर सिंध चलन हे सालिग्राम यह नित्य ध्यानवाँ हो।
दिहे कबजी रामजी मोहीं दरशनवां हो ॥

❀ पद मन चेतावनी १०३ ❀

मनवाँ भजले सीताराम रटले युगल सुन्दर नाम निस दिन एहो करो सुमिरनवां में ॥ टेक ॥ बड़े भाग से मनुष तनु पावे फिर औसर नहीं आवे प्यारे चारे दिन के तेरे हैं रहनवां में ॥ मनवाँ ॥ अबहीं से करले तु संभार काहे करत बेगार माया मोह परे लोभ लपटनवां में ॥ मनवां ॥ मृत्यु खड़ो मुह बाय शिर पर काल मंडराय एक दिन छुटो जैहे सबही गुमनवाँ में ॥मनवां॥ कहे सालिग्राम बिचार सिया पिया है आधार यही लेहु मेरे तु कहनवां में मनवाँ भजले सीताराम रटले युगलमनो सुन्दर नाम निसदिन एह करो सुमिरनवाँ में ॥

❀ श्रीसीताराम प्रार्थना पूर्वी १०४ ❀

सिया हो पिया देहु तुम मोही दर्शनवा ॥ टेक ॥
दृगन से नीर झरे विरह अगिनीयां जरे
सुधि बुधि सबही हरैनवा ॥ सिया हो पिया ॥
असरन को सरन देत विपति को हरि
लेत भव रोग ताप के नशनवा ॥ सिया हो पिया ॥
दया के सागर स्वामी घट घट के अन्तरजामी
सबही में करत रमनवां ॥ सिया हो पिया ॥
शालिग्राम सीताराम बिशारे न तेरे नाम
निशि दिन गौर श्याम ध्यानवां ॥ सिया हो पिया ॥

❀ मन चेतावनी पूर्वी १०५ ❀

भजनवां करते रहना है प्यारे चारेक दिननवां ॥ भजनवा ॥
पल छिन में आयु शिराती ।
बीतले जाले दिनवां रातों ।
सुन हुइऐं एक दिन भवनवा ॥ भजनवा ॥
यह तन कांच के भाई ।
गिरतहि धूरि मिल जाहिं ॥
छुटजहिं जैहैं सबहि गुमनवा ॥ टेक ॥
दुनियां से दौलत खजाना ।
सारे सम्पती नाना ॥
अन्त न कोई जैहैं संगवां ॥ टेक ॥

शालिग्राम सीताराम
रसना रसीले नामो
गही तू करो गुन गनवा
भजनवा करले रहना प्यारे चारेक दिननवां।

❀ मन चेतावनी पूर्वी १०६ ❀

समझ के चलना माया के बजरिया भुलल मनवां॥ टेक॥
बड़े भाग मानुष तनुपाये वेद पुरानन गाये कर्म भूमी भारत खण्ड टेकनवां॥ समझके॥ कठिन कराल काल छनही में मारे गाल। छुटी जहिहैं सब हो गुमनवां॥ समुझ॥ अबहो से चेत करो प्रभू जी के ध्यान धरो। आनन्द कन्द सुख दनवां॥समुझके॥ सालिग्राम सीताराम बिसरे न दोऊ नाम मानो जे तू मेरे कहनवां समुझ के चलना माया के बजरिया भूलल मनवां॥

❀ पद प्रार्थना राग बनारसी १०७ ❀

भगवन् केही बिधि करू तेरे पूजनवा में॥ टेक॥
नही मन्त्र पुण्यफल मिले नाही अनुकूल नाही देखी परे एको समानवां में॥ भगवन केही विधी॥ नही विद्या वल बुद्धि नहीं कछु ज्ञान सिद्धि प्रभू एको नाही बनत साधनवा में॥ भगवन्॥ बिश्व बिश्वम्भर तोही है जगदीश्वर मोही सब घट २ करत रमनवा में॥ भगवन॥ शालीग्राम सीताराम भजले तू गौर श्याम प्यारे बिसरे न पल छीन ध्यानवा में भगवन के बीधी करो पुजनवा में।

❀ पद मनसम्बोधन १०८ ❀

डगरिया भूले जाना है प्रभु के नगरिया ॥ टेक ॥
नहीं कोई संगी साथी जैहों कवन भाँती ।
सूझे नहीं मोही नजरिया ॥ डगरिया ॥
दिव्य सिंघासन जहां दोऊ विराजे तहां ।
रविशशी कोटी नजरिया ॥ डगरिया ॥
कोई लिए छत्र चँवर कोई लिए पान अबर ।
कोई करे सुन्दर बैयरिया ॥ डगरिया ॥
शालिग्राम सीताराम विसरोना यही नाम ।
सिया जू लैहैं खबरिया ॥ डगरिया ॥

❀ श्रीसीताराम झांकी पद ध्यान १०९ ❀

दरशनवां करिले गौर श्याम जोड़ी मन के हरनवां ॥टेक॥
इत शिर चन्द्रिका राजे उत शिर मुकुट विराजे भाल मृग केश-चन्दवां ॥ दरशनवां ॥ तिरछी नजरिया बांकी हिया में चुभे ला बांकी मन्द मधुर दोऊ मुसुकनवां ॥ दरशनवां ॥ इतमनी चन्द्र-हार उत कण्ठा मनीधार नील पीत बसन भूषनवां ॥दरशनवां॥ शालिग्राम सीताराम भूलो नही आठोयाम निसदिन तेरे यही ध्यानवां ॥ दरशनवां ॥ करिले गौर श्याम जोड़ी मनके हरनवां ।

दोहा—सीतापति रघुनाथ तेरे, युगल भरोसा नाम ।
निशदिन मोहि विसरो नहीं, देवहु दरस शालिग्राम ॥
श्रीसीताराम ही प्रेम पदावली पढ़िये सुजन सुजान ।
लोक बने परलोक में सदा करे कल्यान ॥

❀ अन्तिम प्रार्थना सवैया ११० ❀

हे रघुनन्दन हो दुःख भञ्जन आरती हरण है शरण तुम्हारी ॥
बिगड़े बहुजन्म अनेकमोही सुधरे प्रभु नाम ही तेरे पुकारी ॥
अपराध अगाध परे भवसिन्धु बिशाल भुजा गहि लेहुनोकारी ॥
सालिग्राम कहे सियाराम भजे सुधि लीजे तू नाथहिं अवधबिहारी

❀ श्रीसीताराम-आरती पद १११ ❀

प्यारे आरती कीजै प्रिया प्रीतम सियाराम की ॥ टेक ॥
कर कपूर कंचन की थारा विविध भांति आरती संवारी ।
जगमग ज्योति सियाराम की ॥प्यारे०॥
काम क्रोध मद लोभ सतावन त्रिविध ताप भव रोग नसावन
युगल रूप शुभ नाम की ॥ प्यारे० ॥
आरति हरन शरन सुखदायक सीतापति शोभित रघुनायक ।
झांकी ललित ललाम की ॥ प्यारे० ॥
शिव बिरंचि नारद शनकादिक ध्यान धरत सुर नरमुनि आदिक
जीवन धन शालिग्राम की ॥ प्यारे० ॥

प्रेम

इति श्रीसीताराम पदावली सम्पूर्ण

श्रीमनीराम जी की छावनी का संक्षिप्त परिचय

—◌❀◌—

❀ गुरुमहिमा शब्दार्थ दोहा ❀

गु कहत अन्धकार को, रु कहत प्रकाश।
गुरु शब्द कल्याण दोऊ, हरत महाभव त्रास ॥

सप्त पुरियों में श्रेष्ठ अवधपुरी है यही,
जाकी वेद शास्त्रों में कीरति बखानी है।
वैसे वो अनेक सिद्ध सन्तों के अखाड़े किन्तु,
मनीराम छावनी को दूसरो न शानी है।
प्रथम महान सिद्ध सन्त श्री स्वामी मनीराम जी वे,
कृपापात्र श्रीवैष्णवदास जानी है।
जाके कृपापात्र श्रीरामचरण दास हुए,
चौथे श्रीरामशोभादास जी प्रमानी हैं।
शुद्ध साधु सेवा का स्वरूप है प्रत्यक्ष यहां,
सच्चे साधु सन्त ही निबाह यहां पाते हैं।
अभ्यागत दीन दुःखी लूले लंगड़े भी सभी,
प्रभू का प्रसाद पाके आनन्द मनाते हैं।
ज्ञान कर्म भक्ति की त्रिवेणी बहती है यहां,
डुबकी लगाके लोग तरते चले जाते हैं।
पूज्य महाराज का प्रबन्ध है अनूप दिव्य,
देखने पुराने ऋषि आश्रम याद आते हैं।

दो०—श्रीमनीराम जी की छावनी चार धाम में नाम।
सन्त सेवा हरि कथा नित तहां निवास शालिग्राम ॥

❀ श्रीमनीराम जी की छावनी का संक्षिप्त परिचय ❀

सप्त पुरियों में श्रेष्ठ अवधपुरी है यही,
जाकी वेद शास्त्रों में कीरति बखानी है।
वैसे तो अनेक सिद्ध सन्तों के अखाड़े किन्तु,
मनीराम छावनी को दूसरों न शानी है।
प्रथम महान सिद्ध सन्त श्रीस्वामी मनीराम जी वे,
कृपापात्र श्रीवैष्णवदास जानी है।
जाके कृपापात्र श्रीरामचरण दास हुए,
चौथे श्रीरामशोभादास जी प्रमानी हैं।
शुद्ध साधु सेवा का स्वरूप है प्रत्यक्ष यहां,
सच्चे साधु सन्त ही निवाह यहां पाते हैं।
अभ्यागत दीन दुःखी लूले लंगड़े भी सभी,
प्रभू का प्रसाद पाके आनन्द मनाते हैं।
ज्ञान कर्म भक्ति की त्रिवेणी रहती है यहां,
डुबकी लगाके लोग तरते चले जाते हैं।
पूज्य महाराज का प्रबन्ध है अनूप दिव्य,
देखते पुराने ऋषि आश्रम याद आते हैं।
दो०-श्रीमनीराम जी की छावनी चार धाम में नाम।
सन्त सेवा हरि-कथा नित तहां निवास शालिग्राम॥

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
अयोध्या
श्री मणिराम दास छावनी सेवा ट्रस्ट